Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2024 5(1), 2199–2204

TEACHER IS THE DECISIVE TOOL OF HISTORY TEACHING

इतिहास शिक्षण का निर्णायक उपकरण शिक्षक

Nipun Nishant [1], Prof. Ashish Ranjan [2], Dr. Samaresh Bharaty [3]

[1] Ph.D. Research Scholar, Faculty of Education, University of Delhi, India
[2] Faculty of Education, University of Delhi, India
[3] Faculty of Teacher Education, Central University of South Bihar, Gaya, India

ABSTRACT

English: Teaching of any subject is an art. Which keeps on changing according to the nature of the subject. Therefore, the subject teacher faces many challenges while explaining the concepts of the subject in the course of teaching in the class. These challenges are more or less in the nature of every subject, which together with the learning level of the students make the teaching more serious. The solution to these challenges in teaching can be found by keeping some things in mind while the subject teachers are being trained, at that time itself a proper solution to these challenges can be found. For example, teachers preparing to teach history should be told that there is less coordination between school history book writing and teaching of history because generally the people doing these two tasks are different. To bridge this gap, trainee teachers will have to develop an understanding of the role of historians in creating history teachers (understanding the nature of history writing, understanding the historian's perspective), along with this, it is also very important to keep in mind what it means to teach and learn history. Apart from this, it is also important to know the nature of the subject of history such as what is history, why is it important in school education, what abilities are developed in the student after teaching history, along with its other important aspects, it is also necessary to be well acquainted with the nature of curriculum, syllabus and textbooks (content and objectives), because this will enable teachers to teach history in an inclusive manner in the class by becoming familiar with class diversity and the background of the students. Due to which, in the words of Krishna Kumar, teachers will also be able to get rid of the image of a "meek dictator". To understand the concepts of history, teachers need to develop some basic understanding in the students such as the concept of change of time, causality, context, complexity, possibility etc. Due to which the students will be able to understand the historical meaning obtained from primary and secondary sources and will be able to form arguments in its favour and against, which is the most important objective of history teaching. Due to which the expressed and implicit objectives of the curriculum will also be fulfilled.

Hindi: किसी विषय का शिक्षण एक कला है । जो विषय की प्रकृति के अनुसार बदलती रहती है । इसलिए विषय शिक्षक, कक्षा में शिक्षण के क्रम में विषय की अवधारणाओं को समझाने के दौरान कई चुनौतियों से रूबरू होता है । यह चुनौतियाँ कमोबेश हर विषय की प्रकृति में होती हैं जो विद्यार्थियों के अधिगम स्तर के साथ मिलकर शिक्षण को और अधिक गंभीर बना देती हैं । शिक्षण में आनेवाली इन चुनौतियों का हल जब विषयी शिक्षक प्रशिक्षित हो रहे होते हैं तो उस समय ही कुछ बातों का ध्यान रख इन चुनौतियों का एक उचित हल पाया जा सकता है । उदाहरणस्वरूप इतिहास शिक्षण के लिए तैयार हो रहे शिक्षकों को यह बताया जाए कि विद्यालयी इतिहास पुस्तकलेखन और इतिहास विषय के शिक्षण में समन्वय कम है क्योंकि अमूमन इन दोनों कामों को करनेवाले लोग अलग-अलग हैं । इस अंतर को पाटने के लिए प्रशिक्षु-शिक्षकों में यह समझ विकसित करनी होगी कि इतिहास शिक्षकों को निर्मित करने में इतिहासकारों की भूमिका किस प्रकार की है (इतिहास लेखन की प्रकृति को समझना, इतिहासकार की दृष्टि को परखना), इसके साथ ही इतिहास विषय को पढ़ाना और सीखना क्या होता है इसको भी ध्यान में रखना बेहद जरूरी है । इसके अतिरिक्त इतिहास विषय की प्रकृति को भी जानना जरूरी है जैसेकि इतिहास क्या है, यह विद्यालयी शिक्षा में क्यों जरूरी है साथ ही इतिहास शिक्षण के उपरांत

Corresponding Author

Nipun Nishant,
nipun2nishaht@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.2235

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

शिक्षार्थी में किन-किन क्षमताओं का विकास होता साथ ही इसके अन्य महत्वपूर्ण पहलू पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों की प्रकृति (विषयवस्तु और उद्देश्य) से भी भली-भांति परिचित होना जरूरी है, क्योंकि इससे शिक्षक कक्षाई विविधता और विद्यार्थियों के पृष्ठभूमि से परिचित होकर कक्षा में इतिहास का समावेशी शिक्षण कर सकेंगे । जिससे कृष्ण कुमार के शब्दों में शिक्षक "मीक तानाशाह" की छवि से भी मुक्त हो सकेंगे । इतिहास की अवधारणाओं को समझने के लिए शिक्षकों द्वारा शिक्षार्थियों में कुछ बुनियादी समझ को विकसित करने की जरूरत है जैसेकि समय के बदलाव की अवधारणा, कारणता, संदर्भ, जटिलता, संभावना इत्यादि । जिससे शिक्षार्थी प्राथमिक एवं गौण स्रोतों से प्राप्त ऐतिहासिक अर्थ को समझकर उसके पक्ष और विपक्ष में तर्क गढ़ सकेंगे, जो इतिहास शिक्षण का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य है । जिससे पाठ्यचर्या के व्यक्त और अव्यक्त उद्देश्य भी पूरा हो सकेंगे ।

Keywords: Effective Teacher, Subject-Continuum, Historical-Continuum, Historical-View, प्रभावी शिक्षक, विषय-सातत्य, ऐतिहासिक-सातत्य, इतिहास-दृष्टि

1. इतिहास शिक्षण का निर्णायक उपकरण शिक्षक

किसी विषय का शिक्षण एक कला है। जो विषय की प्रकृति पर तो निर्भर होती ही है। लेकिन विषय का शिक्षण करनेवाला भी अपनी महती भूमिका निभाता है। ज्ञात विषयों के बारे में समय के साथ यह धारणा विकसित होने लगी है कि हर विषय किसी खास तरह के अध्यापन का अभ्यस्त है, जोकि एक कालक्रम में विकसित हुआ है। बीतते वक्त में विज्ञान के प्रयासों ने तार्किकता और क्रमबद्धता को बल दिया है, जिससे कमोबेश हर विषय में दृष्टिगत बदलाव आया है। जिससे विषय को देखने व विषय के देखने दोनों के नजरिया में बदलाव आया है जोकि विषय की व्यापकता, सारगर्भिता, वस्तुनिष्ठता एवं प्रासंगिकता के लिए जरूरी है।

कक्षा में विषय शिक्षण एक उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य है जो कई तत्वों पर निर्भर करता है जैसे विद्यार्थी की पृष्ठभूमि (विद्यार्थी की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, भाषाई समझ) जेंडर संवेदनशीलता, विषय की प्रकृति, महत्व और उद्देश्य एवं विषय के स्तर पर विद्यार्थी हेतु उपलब्ध शिक्षण सामग्री का स्तर इत्यादि। इन सबके अलावा जो सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है वह है विषय पाठ्यक्रम का। जहाँ तक देखा जाय तो अध्ययन व अध्यापन के क्रम में जो वास्तविक उपस्थिति होती है, वह है शिक्षक, विद्यार्थी और पाठ्यक्रम का। इस तरह पाठ्यक्रम पर यदि गौर करें तो यह अपने स्वरूप में मध्यवर्ती चरित्र का है जो पाठ्यचर्या से आकारित होकर पाठ्यपुस्तकों में विस्तार प्राप्त करता है । लेकिन, इस व्यवस्था में एक बड़ी समस्या यह है कि इसका मध्यवर्ती स्वरूप होने के कारण इसके परास का पता नहीं चल पाता है। इस क्रम में विषय शिक्षण बुरी तरह से प्रभावित होता है। इसके लिए फिर जरूरी हो जाता है कि पाठ्यक्रम के उद्देश्य की तरफ विषय शिक्षक ध्यान दें ताकि शिक्षण का प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रभाव शिक्षण-सामग्री व पाठ्यपुस्तकों से होते हुए विद्यार्थी के पास तक पहुंचे। यह एक दुरूह प्रक्रिया है।

इस प्रकार देखा जाए तो शिक्षण के सुचारु रूप से चलने और चलाने का पूरा दायित्व शिक्षक पर आ जाता है । जहां तक प्रभावी शिक्षक (न कि लोकप्रिय) की बात है तो वे पाठ्यक्रम के गहन अध्ययन को तो केंद्र में रखते ही हैं साथ में पाठ्यचर्या में घोषित व अघोषित उद्देश्यों को भी साधने की कोशिश करते हैं । इस क्रम में प्रभावी शिक्षक का दायित्व दोहरा हो जाता है कि वह पाठ्यचर्या के साथ शिक्षण-सामग्री (पाठ्यपुस्तक सहित) का चयन भी सावधानी से करे ताकि शिक्षण के साथ पाठ्यचर्या का भी उद्देश्य सफल हो ।

पाठ्यचर्या की प्रकृति गागर में सागर की भांति है। जो अपने साथ कई उद्देश्यों को साथ में लेकर तो चलती ही है लेकिन अच्छी पाठ्यचर्या देश निर्माण और अपने अच्छे परंपरागत मूल्यों और आदर्शों को भी अपने दायरे में समाहित करके चलती है । इनके अलावा विभिन्न समाज के लिए गढ़ी गई संरूप पाठ्यचर्या में कुछ अनकहे उद्देश्य भी होते हैं जिनका विषय-शिक्षण करते वक्त ध्यान रखना पड़ता है कि कहीं अव्यक्त पाठ्यचर्या के उद्देश्यों का उल्लंघन न होने पाए। पाठ्यचर्या का निर्माण देश के प्रबुद्ध जन करते हैं जो विषय के अतीतए वर्तमान और भविष्य को ध्यान में रखकर विषय-सातत्यता को महत्व देते हैं जिसमें उनकी आकांक्षाएं अनंत की संभावनाओं को समेटे हुए होती है, लेकिन समस्या इस बात की होती है कि शिक्षक उनकी भावी आकांक्षाओं से भली-भांति परिचित नहीं होते, जिससे बात यहीं नहीं रुकती यह और भी समस्याग्रस्त होती चली जाती है । जब शिक्षक पाठ्यचर्या निर्माता की भावी अज्ञात महत्वाकांक्षा से पूर्णतः

परिचित नहीं होता है, तब विषय के वांछित उद्देश्यों के सामने कक्षा में शिक्षक सीमित उद्देश्यों को लिए दिखाई पड़ने लगता है । जिससे कालांतर में कृष्ण कुमार के शब्दों में शिक्षक धीरे-धीरे "मीक तानाशाह" बनते चले गए हैं ।

देखा जाए तो इस समस्या पर थोड़ी राहत पाठ्यक्रम देता है, लेकिन अपने संक्षिप्त रूप के कारण विषय के वांछित उद्देश्यों को और गहरा और असीमित अर्थों वाला बना देता है । इन सबसे शिक्षकों की समस्याएं और बढ़ जाती हैं कि वह कक्षा में क्या पढ़ाएं, कितना पढ़ाएं और कैसे पढ़ाएं । इन जिम्मेदारियों का सरोकार अमूमन अकेले शिक्षक पर हीं नहीं होता बल्कि यह राज्य की भी सम्मिलित जिम्मेदारी होती है । इस समस्या के हल हेतु राज्य समर्थित संस्थाएं (एन. सी. ई. आर. टी. व एस. सी. ई. आर. टी.) इसके परिमार्जन के लिए पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम के साथ पाठ्यपुस्तकों को भी निर्मित करती हैं । देखा जाए तो कुछ हद तक पाठ्यपुस्तकेंए पाठ्यचर्या व पाठ्यक्रमों का व्यक्त उद्देश्य तो हल करती है, लेकिन पुस्तकों की भी सीमा है कि वह ज्ञान व तथ्य के सभी रूपों को अपने में जगह नहीं दे पाता इसलिए पाठ्यपुस्तकें स्वयं से भी इस समस्या का सीमित हल ही दे पाती हैं। इन समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए एन. सी. सुब्रह्ममण्यम इनके अन्य कारणों की भी चर्चा करते हैं यथा, पुस्तकों का संक्षिप्त होने के साथ-साथ विशेषज्ञों द्वारा पाठ्यपुस्तकों का निर्मित होना। क्योंकि किसी विषय का विशेषज्ञ (इतिहासकार) होना एक बात है लेकिन विद्यालयी विद्यार्थियों के लिए उस विषय की पाठ्यपुस्तकों को बनाना अलग बात है, अगर कुछ हद तक इन दोनों बातों को एक साथ लेकर भी आते हैं फिर भी इतिहासलेखन और इतिहास शिक्षण को ध्यान में रखते हुए विद्यालयी शिक्षा हेतु किताब लिखना दोनों अलग-अलग चीजें हैं (शिक्षा-विमर्श. पृ. 62. नवंबर-दिसंबर. 2008.)। जहां तक देखा जाए तो इसका कारण यह दिखता है कि विषय विशेषज्ञ कक्षा पाठ्यपुस्तकों को निर्मित तो करते हैं लेकिन कक्षायी शिक्षण की जटिलता से ज्यादा परिचित नहीं होते । इससे पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु और विषय-शिक्षण में समानुपात नहीं दिखता । जिससे कक्षा शिक्षण में व्यवधान उत्पन्न होता है जो अंततः शिक्षक के ही हिस्से में आकर अपना हल ढूंढती है ।

इन सबके अलावा भाषाई विभेद (शिक्षकों और बच्चों के बीच, बच्चों और बच्चों के बीच), पुस्तकों की लिपि का अंतर एवं भावानुवाद भी इस समस्या को और गहरा कर देती हैं। इसके साथ ही स्थानीयता का बोध खासकर इतिहास विषय के संबंध में, शिक्षक और विद्यार्थी दोनों के लिए विषय के संप्रत्यय को समझने और समझाने के क्रम में समस्याग्रस्त कर देते हैं यथा, दिल्ली का रहनेवाला शिक्षक जब देश के अन्य भागों से पढ़ने आए विद्यार्थियों में उदाहरण के तौर पर सामान्यतः स्थानीयता के लिए दिल्ली के आसपास के ही उदाहरण देगा एवं राज्य द्वारा प्रदत पाठ्यपुस्तक में स्थानीय उदाहरणों की ही चर्चा करेगा जो अनजाने में शिक्षण के स्तर को सीमित करेगा क्योंकि बाहरी राज्यों से आए विद्यार्थी इन उदाहरणों से जुडने में असहजता महसूस करेंगे। इनके अलावा पाठ्यपुस्तकों में प्रदत बोध-प्रश्न की महत्ता भी अब विद्यार्थियों के बीच सीमित हो गई जिससे की विद्यार्थियों के स्व-चिंतन की प्रवृतियों में ह्रास आया है। क्योंकि इन दिनों कक्षाई शिक्षण में जो सबसे महत्वपूर्ण प्रचलित उद्देश्य है, वह यह है कि विद्यार्थी विषय को सीखते हुए कक्षा की परीक्षा समय के साथ उत्तीर्ण करें। इससे विद्यार्थी सिर्फ परीक्षा को उत्तीर्ण करना ही अपना लक्ष्य मानने लगे हैं जिससे शिक्षक की प्राथमिकता भी बोध-प्रश्न को लेकर बदल जाती है। यह बात अपने आप में महत्वपूर्ण है कि भावी जीवन के लिए न्यूनतम कक्षा योग्यता जरूरी है जोकि कक्षा-परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद ही प्राप्त हो सकती है, इस तरह देखा जाए तो एक निश्चित समय में इन समस्याओं के साथ पाठ्यचर्या व पाठ्यक्रम में तय शिक्षण उद्देश्यों को पूरा करना शिक्षकों की समस्याओं को और भी अधिक गंभीर बना देता है।

इतिहास विषय विद्यालयी शिक्षा में एक प्रभावी विषय है। यह अन्य विषयों की तरह एक खास प्रकार की शिक्षण पद्धति एवं शिक्षण सामग्री की मांग करता है। विद्यालयी शिक्षण में इतिहास अध्यापन की जो प्रचलित पद्धति है वह है व्याख्यान आधारित पद्धति। जिसमें व्याख्यान देने के साथ इतिहासकारों द्वारा प्रयुक्त किए गए प्राथमिक स्रोतों की चर्चा होती है या उनकी अनुकृति दिखाई जाती है जो अमूमन इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में प्रकाशित भी होती है। इनके अलावा इतिहास विषय के कुछ साहसी शिक्षक बाजार से ऐतिहासिक अनुकृति लाकर शिक्षार्थी को शिक्षण-सामग्री के तौर पर दिखाकर एवं बताकर इतिहास विषय से परिचित करने की कोशिश भी करते हैं। देखा जाए तो सारे प्रयास इतिहास विषय की पुष्टि तो करते हैं लेकिन इतिहास विषय क्या है, यह क्यों पढ़ाया जाता है, साथ ही इसके शिक्षण के उपरांत शिक्षार्थियों में कौन-सी क्षमता विकसित होगी, इसका पता इससे नहीं चल पाता। इस प्रकार देखा जाए तो

इससे विषय की उपयोगिता पर प्रश्न चिन्ह लग जाता है और विषय के प्रति विद्यार्थियों के मन में उपेक्षा का भाव भी उत्पन्न होने लगता है जिससे इतिहास जैसा महत्वपूर्ण विषय विद्यालयी शिक्षा में महत्वहीन होने लगा है। इन समस्याओं से नित दिन कक्षा में इतिहास विषय के शिक्षक को ज्ञात और अज्ञात रूप से रूबरू होना पड़ता है।

'इतिहास क्या है' यह एक दार्शनिक प्रश्न है जो इतिहास को जानने वाले द्वारा नित नए प्रयासों से बार.बार अपने रूप को गढ़ता है और अपने रूप की व्याख्या करता है। हालांकि इतिहास दार्शनिक प्रश्न होने के साथ व्यक्तिनिष्ठ प्रश्न भी बनने लगता हैं क्योंकि इसके रूप की विविधता को लेकर मतभेद उभरते रहते हैं। लेकिन कुछ बिन्दु ऐसे भी हैं जो इतिहास विषय की वस्तुनिष्ठता की चर्चा कर विषय की प्रासंगिकता को तय करते हैं, यथा इतिहास अतीत का अध्ययन है, इतिहास को पुनःनिर्मित किया जा सकता है लेकिन इतिहास को वास्तविक रूप में जिया नहीं जा सकता है। इसके अलावा इस विषय की प्रकृति तब और भी स्पष्ट होने लगती है जब हम यह जानने की कोशिश करते हैं कि हम इतिहास का अध्ययन क्यों करते हैं और इसका महत्व क्या है, साथ ही इसका शिक्षण किस प्रकार किया जाए कि विद्यार्थी में इतिहास की समझ पुख्ता हो और इतिहास-बोध विकसित हो पाए।

पीटर एन. स्टर्न "इतिहास क्यों पढ़ें" में कुछ बिंदुओं पर दृष्टिपात करते हैं और बताते हैं कि इतिहास हमें लोगों और समाज को समझने में मदद करता है और साथ ही इतिहास हमें परिवर्तन को समझने में मदद करता है और यह भी की हम जिस समाज में रहते हैं वह अस्तित्व में कैसे आया इसकी भी समझ प्रदान करता है (शिक्षा-विमर्श. पृ. 29. नवम्बर-दिसंबर.2008.)। इस तरह से देखा जाए तो अतीत से वर्तमान तक मानव और समाज का विकास कैसे हुआ और अतीत से वर्तमान तक के परिवर्तन का क्या स्वरूप रहा, क्या इनमें क्रमबद्धता थी यदि हाँ तो ऐतिहासिक सातत्य के बिन्दु क्या थे और वे कौन-से कारण विद्यमान थे जिन्होंने सातत्यता को बनाए रखा। इन बिंदुओं को गौर करने की प्रकृति ही इतिहास-बोध के स्वरूप को तय करती है। अन्य शब्दों में कहें तो परिवर्तनशीलता के तत्व को पहचानना और कारण की पड़ताल करना भी इतिहास की समझ को ही इंगित करता है।

इसके अलावा पीटर एन. स्टर्न यह भी बताते हैं कि इतिहास नैतिक समझ बनाने में सहायक होता है साथ ही पहचान भी देता है और अच्छी नागरिकता विकसित करने के लिए भी इतिहास का अध्ययन जरूरी है (शिक्षा-विमर्श. पृ. 30-31. नवंबर-दिसंबर. 2008.)। यहाँ इनका आशय यह है कि अतीत में विभिन्न मुद्दों (धर्म, व्यापार, सत्ता-संघर्ष, भाषाई-संघर्ष, इत्यादि) के कारण जो मानव और समाज की टकराहट हुई वह न तो मानव और समाज की विशिष्ट पहचान है जिसका आदर करना हर मानव और समाज का कर्तव्य है। वर्तमान कल में जब राष्ट्रों का उदय शुरू हुआ तो मानव और समाज से अच्छे नागरिकों की तरह बनने की अपेक्षा की जाने लगी ताकि सभी राष्ट्र अपने-अपने लोगों और समाजों का विकास कर अपनी राष्ट्रीयता को सर्वश्रेष्ठ बना सकें, हालांकि इस सर्वश्रेष्ठता के प्रयास ने राष्ट्रों में आपसी संघर्षों को बढ़ावा भी दिया।

पीटर एन. स्टर्न इतिहास शिक्षण के उपरांत शिक्षार्थी में किन क्षमताओं का विकास होता है, इसकी भी चर्चा की है और बताया है कि इससे शिक्षार्थियों में साक्ष्यों के आकलन की क्षमता आ जाती है, साथ ही परस्पर विरोधी व्याख्यायों के आकलन की भी क्षमता आ जाती है, जिससे अतीत के परिवर्तनकारी उदाहरणों के आकलन का अनुभव शिक्षार्थियों में आ जाता है (शिक्षा-विमर्श. पृ. 31. नवंबर-दिसंबर. 2008.)। इन बातों से यह बात तो स्पष्ट होता है कि शिक्षार्थी इस काबलियत को प्राप्त करनेके बाद वे इतिहास के मूलरूप को समझ सकेंगे और उनका प्रयोग बिना पूर्वाग्रह के कर सकेंगे साथ ही इससे प्राप्त परिणामों के अनुभवों से वर्तमान के जीवन में आ रहे परिवर्तनों को समझ सकेंगे और अपने जीवन व राष्ट्र के तय उद्देश्यों को सही दिशा दे सकेंगे।

उपरोक्त बातों की पुष्टि जॉन डिवी के शैक्षिक लेख "आरंभिक शिक्षा में इतिहास के उद्देश्य" से भी होती है जिससे यह बात निकालकर सामने आती है कि इतिहास को तथ्यों और जानकारियों के ढेर के रूप में देखने के बजाय ऐसी शक्ति के रूप में देखा जाना चाहिए जो वर्तमान और भविष्य को आकार देने में सक्रिय है (शिक्षा-विमर्श. पृ. 5. नवंबर-दिसंबर. 2008.)।

इन सब महत्वपूर्ण बातों की चर्चा के बाद जो सबसे महत्वपूर्ण सवाल पैदा होता है कि कैसे शिक्षण संबंधी समस्याएं हल हो सके और शिक्षार्थी यह गुण विकसित कर सके कि इतिहास विषय के वे कौन-कौन से तत्व हैं जिससे शिक्षक आगे चलकर इतिहास विषय का शिक्षण करे तो कक्षा में व्याप्त समस्याओं को पहचान कर उसका निदान कर सके साथ ही पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम के व्यक्त और अव्यक्त उद्देश्यों

की पूर्ति कर सके । इनके अलावा जो कक्षाई विविधता शिक्षार्थी के स्तर पर है उस पर पूरी तरह से ध्यान दिया जा सके जिससे इतिहास शिक्षण का सार्थक उद्देश्य पूरा हो सके।

इसके लिए थॉमस ऐंद्रयूज और फ्लेंनरी बर्क यह बताते हैं कि विद्यार्थियों में इतिहास की दृष्टि से देखने के मायने ही विकसित कर दिए जाएं जिससे कि शिक्षार्थी आजीवन इतिहास-दृष्टि से चीजों को देख सके और समझ सके। इस तरह के दृष्टि-कौशल को कक्षा में शिक्षक विभिन्न तरह की कार्य परियोजना द्वारा सीखा सकता ह। हालांकि यह काम शिक्षक के लिए श्रम-साध्य हो सकते हैं लेकिन कक्षा में इतिहास-दृष्टि को विकसित करने के लिए यह जरूरी है जो विद्यार्थियों में धीरे-धीरे ऐतिहासिक चिंतन को विकसित कर पाएगा । जिससे कक्षा-शिक्षक, शिक्षार्थी एवं अन्य तत्वों (पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, भाषायी विभेद, स्थानीय विभेद) के बीच का गतिरोध टूटेगा और इतिहास विषय की शिक्षण स्वीकार्यता एवं प्रासंगिकता बढ़ेगी ।

"इतिहास की दृष्टि से सोचने का अर्थ" में थॉमस ऐंद्रयूज और फ्लेंनरी बर्क का कहना है कि इसके लिए पाँच बुनियादी अवधारणाएँ हैं जिनको शिक्षकों और शिक्षार्थी को जानना व समझना जरूरी होगा । ये धारणाएं हैं जैसे, समय के साथ बदलाव की अवधारणा, कारणता, संदर्भ, जटिलता और संभावना (शिक्षा-विमर्श. पृ. 23. नवंबर-दिसंबर. 2008.)। यदि कक्षा में शिक्षक शिक्षार्थियों को इन पाँच अवधारणाओं से जोड़ देता है तो शिक्षार्थी प्राथमिक एवं गौण स्रोतों से प्राप्त ऐतिहासिक अर्थ को समझकर उसके पक्ष और विपक्ष में तर्क गढ़ सकेंगे।

चूंकि यह शीर्षक मेरे शोध से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है इसलिए शोधार्थी ने अपनी शोध यात्रा में विभिन्न लेखों को पढ़ने के उपरांत जो समझ बनी उसके आधार पर विद्यालय स्तर के इतिहास विषय के शिक्षकों और विद्यालय के विद्यार्थियों से इस संबंध पर असंरचित साक्षात्कार किया साथ ही गहन समूह परिचर्चा भी की।

निष्कर्षत: देखा जाए तो विद्यार्थियों में इतिहास की समझ को लेकर दुविधा दिखी। पहली दुविधा तो यह थी कि इतिहास को पढ़ने की जरूरत क्यों है साथ ही यदि इतिहास सबकुछ कहानी ही है तो कहानी समझ लेंगे और जो जरूरत के तथ्य हैं वह रट लेंगे। विद्यार्थियों ने यह भी कहा कि इस विषय से कौन-सी नौकरी मिल जाएगी, सब तो अतीत की बातें हैं जो सबसे ज्यादा गौर करनेवाली बात थी उसमें उन्होंने यह कहा कि हम तो इतिहास में नहीं रहते, हम तो वर्तमान में रहते हैं, क्या हमारा भी इतिहास है। इस तरह की अवधारणाओं से शिक्षार्थी इतिहास की प्रासंगिकता और विषयवस्तु को महत्वहीन मान रहे थे ।

देखा जाए तो यह सारी समस्याएं शिक्षण के स्तर की हैं। इस स्तर पर शोधार्थी ने इतिहास विषय के शिक्षकों से भी बात की तो यह निष्कर्ष निकलकर आया कि शिक्षक भी इतिहास विषय की प्रासंगिकता की बारीकियों से अपरिचित थे, उनका मानना था कि यह विषय सिर्फ प्रतियोगिता परीक्षा एवं कक्षाई परीक्षा के लिए जरूरी है। यहाँ एक बात गौर करने लायक थी कि शिक्षक, इतिहास और मानव जीवन के विकास को अलग-अलग देखते हुए प्रतीत होते हैं। वह यह नहीं देख पाते कि इतिहास मानव जीवन के विकास की कहानी है। शिक्षक मानव जीवन के ऐतिहासिक विकास की बात तो करते हैं लेकिन वर्तमान मानव से उनका जुड़ाव बहुत स्पष्ट रूप से स्वीकार नहीं करते दिखते हैं। इतिहास के संप्रत्यय पर शिक्षकों की समझ संतोषजनक दिखी लेकिन विषय में नवोन्मेष के प्रति उदासीनता दिखी।

शिक्षण की इन उपरोक्त समस्याओं का हल ब्रूस वानस्लेडराइट अपने शैक्षिक लेख 'इतिहास अध्यापन की जड़ता' में बताते हैं कि "इतिहास पढ़ाने के बारे में परवाह करने का अर्थ तब बनेगा कि जब इतिहास शिक्षकों को तैयार करने में इतिहासकारों की महत्वपूर्ण भूमिका को पहचाना जाए, इस समझ को गंभीरता से लिया जाए कि इस विषय को पढ़ाना और सीखना क्या होता है। साथ ही शिक्षा स्कूलों में लोगों के साथ संवाद करना कि कैसे एक अप्रभावी व्यवस्था को तोड़ा जाए जो शुरू से ही ज्यादातर ऐतिहासिक अज्ञान के निर्माण में योगदान देती है" (शिक्षा-विमर्श. पृ. 20. नवंबर-दिसंबर. 2008.)।

संदर्भ-सूची

कार, ई. एच. (1987). इतिहास क्या है. नई दिल्ली:मैकमिलन इंडिया लिमिटेड.
वर्मा, ला. ब. (2015). इतिहास: क्यों-क्या-कैसे. नई दिल्ली: हि.मा.का.नि.दिल्ली विश्वविद्यालय.
चौबे, झा. (2004). इतिहास दर्शन. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन.

स्टर्न, पी. एन. (2008). इतिहास क्यों पढ़ें ?: शिक्षा-विमर्श, वर्ष 10, अंक 6, 29-31.
डिवी, जॉ. (2008). आरंभिक शिक्षा में इतिहास के उद्देश्य: शिक्षा-विमर्श,वर्ष 10, अंक 6, 5.
वानस्लेडराइट, ब्रू. (2008). इतिहास अध्यापन की जड़ता: शिक्षा-विमर्श,वर्ष 10, अंक 6, 18-20.*
थॉमस ऐंद्रयूज और फ्लेंनरी बर्क (2008). इतिहास की दृष्टि से सोचने का अर्थ ?: शिक्षा-विमर्श, वर्ष 10, अंक 6, 23.
सुब्रह्ममण्यम, सी. एन. (2008). स्कूल स्तर पर इतिहास शिक्षण का नजरिया: शिक्षा-विमर्श, वर्ष 10, अंक 6, 62.
एन. सी. ई. आर. टी. (2007). शिक्षा के लक्ष्य राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार-पत्र. नई दिल्ली: एन. सी. ई. आर. टी.
एन. सी. ई. आर. टी. (2007). सामाजिक विज्ञान का शिक्षण राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार-पत्र. नई दिल्ली: एन. सी. ई. आर. टी.
एन. सी. ई. आर. टी. (2007). शिक्षा के लक्ष्य राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार-पत्र. नई दिल्ली: एन. सी. ई. आर. टी.
मानव संसाधन विकास मंत्रालय . राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: भारत सरकार.